بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 24 जनवरी 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

अब्दुल्लाह बिन रवाहा नामक सैन्य अभियान जो कि उसैर बिन रिज़ाम की ओर भेजा तथा उमरू बिन उमय्या ज़मरी नामक सैन्य अभियान के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का बयान।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-24.01.2025
محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशहहुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने में जो सैन्य अभियान हुए उनका वर्णन हो रहा था। आज इस क्रम में सबसे पहले कुर्ज़ बिन जाबिर नामक सरिय्ये का वर्णन करूंगा।

यह सैन्य अभियान शव्वाल 6 हिजरी में उरानीन की ओर हुआ। कोई कहता है कि यह सरिय्या सईद बिन ज़ैद का था परन्तु अधिकांश का कथन है कि यह सरिय्या कुर्ज़ बिन जाबिर का था, जबकि एक कथन यह भी है कि यह सरिय्या जरीर बिन अब्दुल्लाह का है, किन्तु इस कथन को भी खंडित किया गया है। इस सैन्य अभियान का विस्तारण इस प्रकार है कि उकल तथा अरीना नामक क़बीलों के लगभग आठ आदमी आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए जो बीमार भी थे और निवेदन किया कि हमें शरण दें और हमें भोजन करवाएँ। वे मस्जिद ए नबवी में ठहरे और जल्दी ही स्वस्थ हो गए, परन्तु उन्हें मदीने की जलवायु रास नहीं आई, अतएव आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा एवं आदेश से ये लोग ऊंटों की चरागाह में चले गए। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के अत्यन्त स्नेह पूर्ण व्यवहार के बावजूद जब ये लोग चरागाहों में ऊँटनियों के पास आए तो काफ़िर हो गए और ऊँटनियों को हांक

कर अपने साथ ले गए। गोया स्वस्थ होकर उन्होंने आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ धोका किया। आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा स्वतंत्र किये हुए यसार नामक गुलाम तथा उनके कुछ साथियों ने उनका पीछा किया तो उन्होंने मुसलमानों से लड़ाई की और अत्यन्त निर्दयता से यसार के हाथ पैर काट कर उनकी आँखों और ज़बान में कांटे चुभोए और उन्हें शहीद कर दिया। फिर यह चरवाहों की ओर आए और उन सबको भी मार डाला। बच जाने वाला एक व्यक्ति आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और निवेदन किया कि उन्होंने मेरे साथी की हत्या कर दी है और ऊंटों को लेकर चले गए हैं। इस सूचना के मिलने पर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बीस लोगों की एक पार्टी रवाना की जिसने आँहज़रत स. की दुआ स्वीकृत होने की दशा में उसी दिन अथवा अगले दिन, इन लोगों को पकड़ लिया और ये लोग आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश किये गए।

विभिन्न रिवायतों के अनुसार आँहज़रत स. ने इन लोगों के साथ वही व्यवहार फ़रमाया जो उन्होंने मुस्लिम चरवाहों के साथ किया था किन्तु उस समय तक शव को कुचलने के विषय में कोई इस्लामी निर्देश नाज़िल नहीं हुआ था, बाद में जब यह निषेध आज्ञा नाज़िल हुई तो आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम जिस सेना को भी रवाना किया करते, उसे शव को कुचलने से मना फ़रमाते और सदक़े की शिक्षा देते।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. फ़रमाते हैं कि मुसलमानों के लिए ये दिन अत्यंत शंका जनक थे क्यूँकि क़ुरैश एवं यहूदियों के उकसाने से पूरे देश में इनकी दुश्मनी की आग भड़क रही थी और अपनी नई योजना के अनुसार उन्होंने यह भी निर्णय लिया था कि मदीने पर सीधे हमला करने की बजाए मुसलमानों को धोखे से हानि पहुंचाई जाए।

इन दुष्टों को दंड देने के सम्बन्ध में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद रज़ी. फ़रमाते हैं- इस मामले में अत्याचार करना काफ़िरों ने शुरू किया था, फिर यह फ़ैसला भी मूसा अलै. की शरीअत के अनुसार किया गया था, लेकिन फिर भी इसे इसलाम ने जारी नहीं रखा और भविष्य के लिए इस तरीक़े को बंद कर दिया।

आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि कुछ पश्चमी शोध-कर्ताओं ने, जिनमें मयूर साहब भी शामिल हैं इस घटना का वर्णन करते हुए, अपनी मानसिकता के अनुसार आपत्ति की है। फ़रमाया- इस मामले में इसलाम का दामन बिलकुल पाक नज़र आता है, क्यूँकि वास्तव में यह फ़ैसला इसलाम का नहीं था, बल्कि हज़रत मूसा का था जिनकी शरीअत को हज़रत मसीह नासरी ने खंडित नहीं किया, बल्कि जारी रखा। हाँ! यदि हमारे मामले पर आपत्ति करने वालों के सम्मुख हज़रत मसीह का यह वचन है कि एक गाल पर थप्पड़ खाकर दूसरा गाल भी सामने कर दो.....सवाल यह है कि क्या यह शिक्षा किसी बुद्धिमान की बुद्धि के अनुसार अमल करने योग्य है. और क्या आज तक किसी मसीही स्त्री या पुरुष अथवा किसी मसीही संगठन अथवा शासन ने इस शिक्षा के अनुकूल कार्य किया है? मिम्बरों पर चढ़ कर उपदेश देने के लिए निःसन्देह यह एक उत्तम शिक्षा है किन्तु व्यवहार की दुनिया में इस शिक्षा का कोई भी औचत्य नहीं। फ़रमाया- इसलाम न्यूनाधिकता (एक

ओर अत्यधिक झुकाव) के रास्ते को छोड़ कर वह बीच की शिक्षा देता है जो विश्व में वास्तविक अमन का आधार है, अर्थात हर एक बुराई का दंड उसके अनुकूल तथा उसकी गहनता के अनुसार होना चाहिए, परन्तु यदि परिस्थितियाँ ऐसी हों कि क्षमा करने अथवा सुविधा देने से सुधार होने की आशा हो तो फिर क्षमा करना अच्छा है और ऐसा व्यक्ति ख़ुदा के यहाँ अच्छा बदला पाने का अधिकारी होगा। इस्लाम ने यह पाबंदी लगा दी है कि यह क्रिया एक उचित सीमा से आगे न बढ़े तथा शव को कुचलने इत्यादि के पशुता वाले काम को पूर्णतः बंद कर दिया गया। इसके विपरीत मसीही लोग बावजूद मसीह नासिरी की प्रदर्शनिक शिक्षा के, जो व्यवहारिक नमूना अपने दुश्मनों के साथ दिखाते रहे हैं तथा युद्धों में जिस प्रकार के सलूक करते रहे हैं और कर रहे हैं, वह विश्व के इतिहास का खुला पृष्ठ है, जिसको पुनः लिखने की इस जगह आवश्यकता नहीं है, क्या कुछ नहीं ये करते।

अब एक युद्ध का वर्णन मैं करूंगा जो ज़ीक़रद नामक युद्ध कहलाता है। इसके विषय में जीवन परिचय लेखकों में मतभेद है कि यह कब हुआ। हदीसविद इसे हुदैबियः की सन्धि के बाद तथा खैबर के युद्ध से पहले हुआ बतलाते हैं, जबकि जीवन परिचय लेखक इसे लह्यान नामक युद्ध के बाद कहते हैं। इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम इसे खैबर के युद्ध से तीन दिन पहले बयान करते हैं। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ने इस युद्ध को मुहर्रम 7 हिजरी का युद्ध बयान किया है। इस युद्ध का विस्तारण कुछ इस प्रकार है कि रसूलुल्लाह स. की बीस दूध देने वाली ऊँटनियाँ थीं तथा कुछ अन्य ऊँट भी शामिल थे। ये ऊँटनियाँ चरागाह में चरती थीं और एक चरवाहा प्रतिदिन संध्या के समय इनका दूध रसूलुल्लाह स. की सेवा में लाया करता था। एक दिन ईनिया फ़जारी ने बनू गत्फ़ान के चालीस घुड़ सवारों के साथ इन पर हमला कर दिया और ये लोग ऊँटनियाँ ले गए। हमले के समय इन लोगों ने हज़रत अबूज़र के बेटे की हत्या कर दी जो इन ऊँटनियों का चरवाहा था और हज़रत अबूज़र की पत्नी लैला को पकड़ कर ले गए। ईनिया अहज़ाब नामक युद्ध के अवसर पर बनू फज़ारह नामक क़बीले का सरदार था। ईनिया ने मक्का की विजय के बाद अथवा एक कथन के अनुसार मक्का पर विजय से पहले इसलाम क़बूल किया। उसने हुनैन तथा ताऍफ़ नामक युद्धों में भी भाग लिया। नबी करीम स. ने उसे बनू तमीम को हराने के लिए पचास सवारों के साथ भेजा था, इसमें कोई भी महाजिर या अंसार सहाबी शामिल न था। एहदे सिद्दिक़ी में यह मुर्तद हो गया और तुलेहा के दावे के बाद उसके साथ मिल गया और उसकी बेअत कर ली। जब यह बन्दी होकर हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास आया तो आप रज़ी. ने उसपर उपकार करते हुए उसे माफ़ कर दिया, इसके बाद इसने दोबारा इसलाम क़बूल कर लिया। इसके विस्तृत बयान में लिखा है कि ईनिया के हमले से पहले हज़रत अबूज़र रज़ी. ने रसूलुल्लाह स. से ऊँटनियों के चरागाह की ओर जाने की अनुमति मांगी। आप स. ने फ़रमाया मुझे तुम्हारे विषय में शंका है कि दुश्मन तुम पर इस ओर से आक्रमण न कर दे, क्यूँकि हम ईनिया तथा उसके साथियों की ओर से अमन में नहीं हैं और यह जगह भी उनके क्षेत्र में ही है। हज़रत अबूज़र रज़ी. ने आग्रह किया तो आप स. ने फ़रमाया मझे आशंका है कि तुम्हारा बीटा मारा जाए और तुम्हारी पत्नी

बन्दी बना ली जाए और तुम एक लाठी का सहारा लिए हुए आओगे। हज़रत अबूज़र रज़ी. कहते हैं कि आश्चर्य है मुझ पे, कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमा रहे थे कि मुझे तुम्हारे विषय में आशंका है और मैं फिर भी आग्रह करता रहा। फिर अल्लाह की क़सम ऐसा ही हुआ, जैसा कि आप स. ने फ़रमाया था। मैं घर में था और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊँटनियाँ बाड़े में वापस लाई जा चुकी थीं, उन्हें सैराब किया जा चुका था अर्थात खाना और पानी दिया जा चुका था, उनका दूध निकाला जा चुका था। फिर हम सो गए तो रात के समय ईनिया ने चालीस सवारों के साथ हम पर आक्रमण कर दिया। उन्होंने रुक कर आवाज़ दी तो मेरा बेटा बाहर निकला जिसकी उन्होंने हत्या कर दी।

इस संदर्भ में हज़रत सलमा बिन अकूअ का दुश्मन का पीछा करने के लिए निकलने का भी वर्णन मिलता है। सलमा बिन अकूअ ने ऊँटनियाँ ले जाने वालों का पीछा किया तथा उनपर एक घोर आक्रमण किया और कई ऊँटनियाँ वापस लेने में सफल हो गए। जब रसूलुल्लाह स. को इन बातों के बारे में पता चला तो मदीने में मनादी करवादी गई। इस मनादी पर कई प्रतिष्ठावान सहाबी रज़ी. उपस्थित हो गए। रसूलुल्लाह स. ने सअद बिन ज़ैद रज़ी. को अमीर नियुक्त फ़रमाया और पीछा करने के लिए रवाना किया और स्वंय रसूलुल्लाह स. पाँच सौ अथवा सात सौ सहाबीयों के साथ रवाना हुए।

हुज़ूरे अकरम स. ने मिक़दाद बिन असवद के भाले पर झंडा बाँधा। इस अभियान में एक घटना का वर्णन इस प्रकार मिलता है कि इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि रसूलुल्लाह स. ने फ़रमाया- अबू अयाश! क्या तुम अपना घोड़ा किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं देते जो तुम से अच्छी सवारी करना जानता हो ताकि वह दुश्मन को जल्दी पकड़ ले। हज़रत अबू अयाश रज़ी. ने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं सबसे अच्छा सवार हूँ, वे कहते हैं कि मैंने कह दिया, आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह कह दिया, और फिर मैंने घोड़े को ऐड़ लगाई, परन्तु अभी पचास गज़ ही चला था कि उसने मुझे धरती पर गिरा दिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि रसूलुल्लाह स. फ़रमा रहे थे कि घोड़ा अपने से अच्छे सवार को दो, और मैं कह रहा था कि मैं सबसे अच्छा सवार हूँ। फिर आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू अयाश रज़ी. का यह घोड़ा हज़रत मआज़ बिन माअस रज़ी. को दे दिया। इस युद्ध में सहाबा रज़ी. ने अति शौर्य एवं बलिदान की भावना से लड़ाई की और कुछ सहाबियों ने बड़ी दलेरी का प्रदर्शन करते हुए शहादत को गले लगाया। ख़ुत्बे के अन्त पर हुज़ूरे अनवर ने यह बयान आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक- 9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131